पाठ 14

मुगलकालीन समाज एवं संस्कृति

मुगलों के शासनकाल में देश में सामाजिकए राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। भारत के विभिन्न भागों तथा अलग.अलग धर्मों और नस्लों के लोगों ने अनेक प्रकार से सांस्कृतिक विकास में योगदान दिया जिससे एक नई राष्ट्रीय संस्कृति का विकास हुआ।

सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

भारत में मुगलों के आगमन से सामाजिक जीवन पद्धतियों में बदलाव आया। जातीय व्यवस्था के अन्दर ही नयी जातियों और उपजातियों का उदय हुआ। मुगल काल में सम्राट और उसका परिवार सर्वोपरि था। उसके उपरान्त दूसरे वर्ग में उलेमाए ;पवित्रए धार्मिक व्यक्तिद्ध सैय्यदए शेख आदि थे। द्वितीय वर्ग में ही मुस्लिम अमीरए अधीनस्थ राज्यों के शासकए जमींदारए जागीरदार आदि थे। मध्यम वर्ग में अध्यापकए हकीमए ज्योतिषीए कविए व्यवसायीए कोतवालए चौकीदारए काजीए चौधरी आदि थे। तत्पश्चात भूमिहीन कृषकए श्रमिकए दरिद्रए निःसहाय दास आदि की श्रेणी थी।

हिन्दू समाज जातियों और उपजातियों में विभाजित था। समाज में ब्राह्मणों का स्थान प्रमुख था। मुगल शासन में इस वर्ग के लोगों को अनुदान, उपहार और राजाश्रय प्राप्त था। तत्पश्चात क्षत्रियों का वर्ग था। उनको प्रशासन और सेना में महत्वपूर्ण पदों पर योग्यता के अनुसार स्थान मिला। तृतीय वर्ग में वैश्य थे। व्यापारिक समुदाय में उनकी महत्वपूर्ण स्थिति थी। समाज के निम्न स्तर के लोग चौथे वर्ग में थे। इसमें पेशेवर समूह भी सम्मिलित थे।

मुगलों के आगमन से पर्दा-प्रथा अधिक व्यापक हुई। स्त्रियाँ पुनर्विवाह या पिता की सम्पत्ति में हिस्से का दावा नहीं कर सकती थीं।

इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता शासक वर्ग के शानो-शौकत के जीवन तथा दूसरी ओर किसानों, दस्तकारों तथा श्रमिकों के गरीबी भरे जीवन के बीच का अन्तर था। मुगल काल की सम्पन्नता का आधार किसानों एवं श्रमिकों की मेहनत थी और उन्हीं के घर दरिद्रता बसती थी।

सांस्कृतिक समन्वय

मुगल शासन के अधीन भारत में स्थापत्य, चित्रकारी, साहित्य एवं संगीत का विकास हुआ। इस दृष्टि से मुगल काल को गुप्त काल के बाद उत्तर भारत का दूसरा स्वर्ण काल कहा जा सकता है। मुगल अपने साथ तुर्क-ईरानी संस्कृति लाये थे जिनका भारतीय परम्पराओं के साथ मिश्रण हुआ।

स्थापत्य

मुगलों ने भव्य किलों, आकर्षक राजमहलों, दरवाजों, इमारतों, मस्जिदों, बावलियों आदि का निर्माण करवाया।

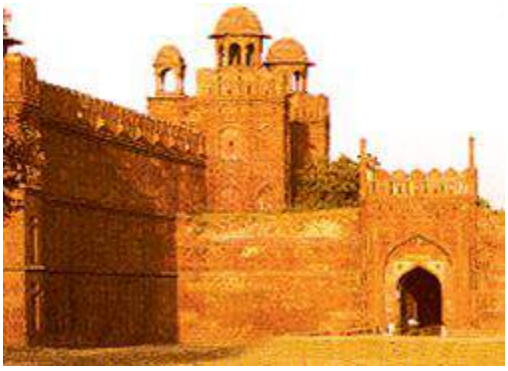

 मुगल शहंशाहों ने कई किले बनवाये जिसमें मुगल तथा भारतीय शैलियों का मिश्रण दिखाई देता है। इन किलों में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।

महलों में स्थानीय, गुजराती, बंगाली तथा फारसी शिल्पकला का मिश्रण देखने को मिलता है।

शाहजहाँ द्वारा बंगला शैली में निर्मित आगरा किले का एक छज्जा

जोधाबाई महल का छज्जा, गुजरात शैली

इनमें छज्जों और सुन्दर छतरियों का इस्तेमाल किया गया है। इनकी दीवारों और छतों की सजावट में फारसी या मध्य एशियाई प्रभाव देखा जा सकता है।

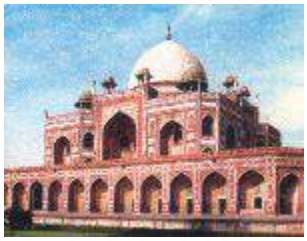

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली

 कई इमारतों में सफेद तथा लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

अकबर का मकबरा, सिकन्दरा

 मुगल शहंशाहों ने इमारतों को सजाने के लिए अर्द्धबहुमूल्य पत्थर जैसे नीलमणि, फिरोजा आदि का प्रयोग फूल-पत्तियों की आकृतियों तथा ज्यामितीय आकारों को बनाने के लिए किया। सजावट की इस पद्धति को "पिएत्रा द्यूरा" (एक प्रकार की नक्काशी) कहते हैं।

पिएत्रा द्यूरा, ताजमहल

कुछ इमारतों में अरबी भाषा में कुरान की आयतें देखने को भी मिलती हैं।

कुरान की लिखी आयतें, ताजमहल

पिएत्रा द्यूरा, एतमादुद्दौला का मकबरा

इनकी इमारतों की विशेषता इनके विशाल गुम्बद, मेहराब, दरवाजे तथा ऊँचे चबूतरे हैं। मुग़लों के गुम्बदों की विशेषता है दो गुम्बदों का प्रयोग। एक बड़े गुम्बद के अन्दर एक छोटा गुम्बद जैसा कि ताजमहल का गुम्बद।

हवा के लिए बनाए गए पंचमहल की सपाट छत को सहारा देने के लिए विभिन्न स्तम्भों का, जो विभिन्न प्रकार के मन्दिरों के निर्माण में प्रयोग किये जाते थे, इस्तेमाल किया गया है।

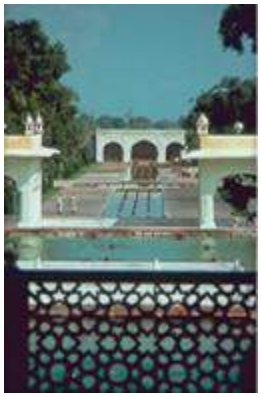

शालीमार बगीचा, लाहौर

मुगलों ने जलस्रोतों से युक्त कई सुनियोजित बगीचे भी लगवाए। जगह-जगह सुन्दर फव्वारे भी थे। कुछ मुगल बगीचे जैसे- कश्मीर में निशातबाग, पंजाब का पिंजौर बाग

और लाहौर का शालीमार बाग प्रसिद्ध हैं। बहते पानी का उपयोग करना मुगलकाल की विशेषता थी।

चित्रकारी

चित्रकारी के क्षेत्र में मुगलों ने विशिष्ट योगदान दिया। उन्होंने भारतीय जीवन से जुड़े प्रसंग तथा प्राकृतिक दृश्यों का चित्रकारी में समावेश किया जैसे दरबार, शिकार तथा युद्ध के दृश्यों का। उन्होंने फारसी कथाओं को चित्रित करने के अलावा महाभारत के फारसी अनुवाद, ऐतिहासिक रचना अकबरनामा तथा दूसरी पुस्तकों को चित्रों से सजाया। उन्होंने भारतीय रंगों जैसे मयूरी नीले रंग तथा लाल रंग का अधिक प्रयोग किया। मुगलों ने अपनी चित्रकारी में ईरानी शैली के सपाटपन के स्थान पर भारतीय कूँची की गोलाई का प्रयोग किया जिससे त्रि-आयामी चित्र बनने लगे। □

दरबार दृश्य, अकबरनामा

संगमरमर की जाली का प्रयोग मुगल काल की देन है।

'तैमूर घराने के राजकुमार' शीर्षक से बनाया गया चित्र हुमायूँ के काल की अनुपम देन है। यह चित्र 1.15 वर्ग मीटर कपड़े पर बनाया गया है। ऐसा माना जाता है कि यह मंगोल परम्परा की देन है, जिसमें तम्बुओं पर वे चित्र बनाया करते थे।

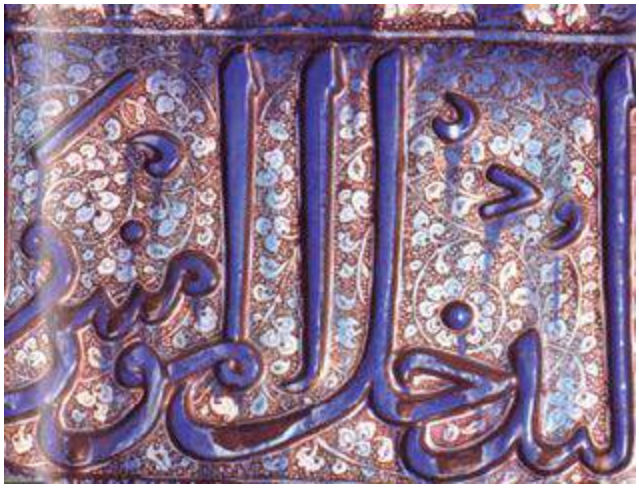

 अकबर के अधीन पुर्तगाली पादरियों ने दरबार में यूरोपीय चित्रकारी का समावेश किया। उनके चित्रों में दूर दिखने वाली आकृतियों को छोटा दर्शाने के सिद्धांत को अपनाया गया। इससे आकृतियाँ अपने सही परिप्रेक्ष्य में सामने आती थीं।

जहाँगीर के काल में चित्रकारी विकास की बुलन्दियों तक पहुँची। जहाँगीर के शासनकाल में मनुष्य की एकल आकृतियों और पशुओं की आकृतियों के चित्रण में विशेष प्रगति हुई।

राजस्थानी शैली की चित्रकारी में पश्चिम भारतीय या जैन शैली की पूर्ववर्ती परम्पराओं का मिश्रण, चित्रकारी की मुगल शैलियों के साथ किया गया। इसमें पुराने विषयों का भी समावेश किया गया है। इस प्रकार इस शैली की चित्रकारी में शिकार के दृश्यों के अलावा, राधा-कृष्ण की प्रेमलीला, बारहमासा अर्थात् वर्ष के विभिन्न मौसम और रागों के चित्रण को भी स्थान दिया गया। पहाड़ी शैली में भी इन परम्पराओं को जारी रखा।

मंसूर द्वारा बनाया गया जेब्रा का चित्र

संगीत

संगीत सांस्कृतिक जीवन का एक और क्षेत्र था जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक-दूसरे से सहयोग किया। अकबर ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक तानसेन का संरक्षक था। तानसेन को कई नए रागों की रचना का श्रेय दिया जाता है।

आइने-ए-अकबरी में 36 संगीतकारों के नाम हैं। औरंगज़ेब दरबार द्वारा आयोजित संगीत को पसन्द नहीं करता था परन्तु वह कुशल वीणा वादक था। भारतीय शास्त्रीय

संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकों की रचना औरंगज़ेब के शासन काल में हुई।

साहित्य का विकास

मुगल शासक साहित्य प्रेमी थे। उन्होंने विद्वानों और साहित्यकारों को राजकीय संरक्षण दिया। इस काल में भी फारसी ही राजभाषा थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी तुर्की में लिखी। इस काल में गुलबदन बेगम, अबुलफजल, बदायूँनी, मुहम्मद कामगार, अब्दुल हमीद लाहौरी आदि ने फारसी में रचनाएँ लिखीं। अकबर ने अथर्ववेद, महाभारत, हरिवंश पुराण तथा रामायण का फारसी में अनुवाद कराया। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह फारसी और संस्कृत का विद्वान था। उसके सहयोग से उपनिषद और भगवद्गीता का फारसी में अनुवाद किया गया।

अकबर के समय में हिन्दी कविता का सर्वाधिक विकास हुआ। मलिक मुहम्मद जायसी, अब्दुर्रहीम खानखाना, नन्ददास उसके काल के प्रमुख कवि थे। महाभारत का अनुवाद बदायूँनी द्वारा 'रज्मनामा' नाम से किया गया। इसी काल में स्थानीय कवि भी उभरे जैसे तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई।

यातायात

मध्यकाल में यातायात के लिए दो साधन प्रयुक्त होते थे। माल व सामान सड़क मार्ग से आता-जाता था। इन मार्गों पर दोनों तरफ छायादार वृक्षों की कतार होती थी। यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर सराय या विश्राम गृह होते थे। व्यापार हेतु जल मार्ग का भी प्रयोग किया जाता था। कश्मीर, बंगाल, ंिसंध, वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में नदी या जल मार्ग अधिक प्रयुक्त होता था।

व्यापार

सत्रहवीं शताब्दी के बाद में भारत में व्यापार प्रसार के कई कारण थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण शासन के अन्तर्गत देश की राजनीतिक एकता तथा बड़े क्षेत्र में शांति और व्यवस्था की स्थापना थी। मुगलों ने सड़क और सरायों के निर्माण की ओर भी ध्यान दिया जिससे यातायात में बहुत सुविधा हो गई। साम्राज्य में किसी भी वस्तु के आयात के लिए समान कर निर्धारित किए गए। मुगलों ने शुद्ध चाँदी के रुपयों का प्रचलन आरम्भ किया जिसकी सारे भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी मान्यता थी। इससे भारत के व्यापार को और भी बढ़ावा मिला।

इस काल में भारत में महत्वपूर्ण व्यवसाय था कपड़े बनाना। सूती कपड़े तैयार करने के केन्द्र देश भर में थे। इनमें प्रमुख थे- गुजरात में पाटन, उत्तर प्रदेश में बनारस और जौनपुर, बिहार में पटना और उड़ीसा एवं बंगाल के बहुत से गाँव। ढाका जिला विशेष रूप से अपने मलमल के महीन कपड़े के लिए प्रसिद्ध था। कपड़ों के रंगने का व्यवसाय भी उन्नत था। शॉल तथा गलीचा बुनने के व्यवसायों ने अकबर के संरक्षण में उन्नति की।

एक और कारण जिससे भारत का व्यापार बढ़ा, वह था सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में अंग्रेज तथा डच व्यापारियों का भारत आना। भारत के व्यापारियों ने इनका स्वागत किया क्योंकि इनसे समुद्र व्यापार पर पुर्तगालियों के एकाधिकार को समाप्त करने में सहायता मिली और भारत का यूरोपीय बाजारों के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया।

कालीकट, मछलीपट्टम, हुगली, श्रीपुरा, चटगाँव इस समय के समृद्ध बंदरगाह थे। यहाँ से भारतीय माल अफ्रीका के समुद्र तट, दमिश्क और सिकंदरिया तथा यूरोप के विभिन्न देशों को ले जाया जाता था। साथ ही यह माल चीन, लंका, इण्डोनेशिया एवं भारतीय टापुओं को जाता था। इन वस्तुओं में गुड़, चीनी, मक्खन, रुई, रुई से निर्मित वस्तुएँ, अनाज, तेल, बाजरा, ज्वार, चावल, नील, सुगंधित पदार्थ, कपूर, लौंग, नारियल, चंदन की लकड़ी, अफीम, कालीमिर्च, लहसुन प्रमुख थीं।

इसी प्रकार सोना मुख्यतः द्वीपसमूहों- चीन, जापान, मोरक्को आदि से तथा मूँगा व अन्य रत्न फारस व अरब के राज्यों से आते थे। पारा लिस्बन से, सीसा, ऊनी वस्त्र,

सिल्क, साटन के कपड़े यूरोप से आते थे।

जहाँ तक थल मार्ग के व्यापार की बात है, मध्य-एशिया, तिब्बत एवं अफगानिस्तान से मेवे तथा फल, हींग, कस्तूरी, सोना, ताँबा, सीसा, शहद, सोहागा, मोम, पक्षी एवं घोड़े आयात किए जाते थे।

इसी तरह देश के भीतर आन्तरिक व्यापार भी उन्नत था। प्रत्येक गाँव में एक छोटा बाजार होता था। कस्बे के बड़े बाजार समय-समय पर लगते थे। फेरी लगाने वाले भी अच्छा व्यापार करते थे। बंजारे दूरस्थ प्रदेशों तथा सेनाओं की आपूर्ति का काम करते थे। कई बार हमें बड़े काफिलों का उल्लेख मिलता है, जिसमें माल 40,000 बैलों के ऊपर लदा रहता था।

सेना, राजस्व, व्यापार तथा कृषि कार्य में सल्तनत काल एवं मुगल काल में क्या अन्तर दिखाई देता है ? चर्चा कीजिए।

मुगलकाल-मूल्यांकन

संस्कृति

मुगल शासकों ने भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक समन्वय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दिशा में भक्ति और सूफी सन्तों के उपदेशों का भी जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सूफी सन्तों ने मानव को शान्ति व भाईचारे का सन्देश दिया। इससे हिन्दू-मुस्लिम एक दूसरे के निकट आये। सूफी संतों में शेख सलीम चिश्ती, मखदूम शेख, अब्दुलकादिर, शाह हुसैन, शेख अब्दुलहक, शेख मुहम्मद गौरी, शेख अहमदसर और शाहवली उल्लाह मुख्य हैं।

इस काल के भक्ति सन्तों में सर्वप्रथम गुरु नानक देव हैं। उन्होंने महान सूफी सन्त शेख फरीद के साथ सत्संग किया। नानक ने जातीय भेद-भाव तथा बाह्य आडम्बर समाप्त

करने का प्रयास किया। इसी काल में तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, मलूकदास, दादू दयाल, रज्जबदार तथा चैतन्य महाप्रभु आदि भक्ति सन्त हुए। इसी काल में चैतन्य, कबीर जैसे सन्तों ने देश के विभिन्न भागों में इस्लाम और हिन्दू धर्म के बीच अनिवार्य एकता पर बल दिया और धार्मिक पुस्तकों के शाब्दिक अर्थों के बजाय प्रेम तथा भक्ति पर आधारित धर्म पर बल दिया।

मुगल बादशाह सभी धर्मावलम्बियों को एक समान देखते थे। हुमायँू सूफी सन्तों से धार्मिक विचार-विमर्श करते थे। अकबर ने प्रशासन में योग्यतानुसार सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व दिया। अकबर ने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की। अधिकांश मुगल बादशाहों ने हिन्दू मन्दिरों और मठों को अनुदान दिया।

मुगल शासकों ने संस्कृत साहित्य का फारसी में अनुवाद कराके, स्थानीय भाषाओं के साहित्य को संरक्षण देकर, धार्मिक सहिष्णुता की अधिक उदार नीति अपनाकर और दरबार तथा सेना में हिन्दुओं को महत्वपूर्ण पद देकर हिन्दुओं और मुसलमानों में पारस्परिक समझ पैदा करने की कोशिश की।

सूफी सन्तों के आगमन ने धीरे-धीरे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम के मूलभूत सिद्धान्तों की बेहतर समझ पैदा की और यह बताया कि दोनों में काफी कुछ समानता है। इससे पारस्परिक सद्भावना और सहिष्णुता की भावना का विकास हुआ। उन्होंने क्षेत्रीय भाषा और साहित्य के विकास में भी योगदान दिया।

प्राचीन भारत में विदेशी धर्म प्रचारक भारत में धर्म प्रचार के लिए आए तथा भारतीय धर्म-प्रचारक भी विदेशों में भेजे गये थे। मुगल काल में भी बाहर से विदेशी धर्म प्रचारक भारत में आए।

तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी

मध्यकालीन भारत में वार्षिक कैलेण्डर के निर्धारण, प्रमुख पर्वों, त्योहारों, ग्रहणों एवं ज्योतिष, ग्रहों व नक्षत्रों के निर्धारण में खगोल की उपयोगिता थी। शेर-ए-मंडल की तीसरी मंजिल पर हुमायूँ की विकसित वेधशाला एवं पुस्तकालय थे। ग्रहों एवं ज्योतिष में उसका व्यक्तिगत ज्ञान अत्यधिक था। अकबर के काल में बनारस की वेधशाला का निर्माण उसके निर्देशानुसार हुआ था। अकबर ने एक नवीन कैलेण्डर का निर्माण किया, जिसे इलाही नाम दिया गया। इसकी शुरुआत उसके शासन-काल के प्रथम दिन से मानी गयी।

इतिहासकारों के अनुसार तुर्क और मुगल शासकों का समुद्र से कोई सम्बन्ध नहीं था। मुगलों ने विदेश व्यापार को महत्व दिया। इसलिए यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों को संरक्षण और समर्थन भी दिया, परंतु वह राष्ट्र के विकास में नौसैनिक शक्ति की महत्ता को नहीं समझ सके। भारतीय शिल्पी जहाज़ निर्माण जैसे क्षेत्रों में यूरोपीय शिल्पियों की नकल करते थे। यद्यपि भारतीय कारीगर काफी कुशल थे तथापि उनकी यांत्रिक क्षेत्र में सोच विकसित नहीं हुई थी।

भारत का नौसैनिक क्षेत्र में पिछड़ा होना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसके पिछड़ेपन का सूचक था। तोपखाने के क्षेत्र में यूरोपीय भारतीयों से श्रेष्ठ थे। मुगल सेना के पास भारी तोपें होती थी जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना कठिन होता था तथा उनके पास कुछ हल्की तोपें भी हुआ करती थीं। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने मुगल तोपखाने के लिए कहा है कि हल्की तोपें रकाब-तोपों की तरह थीं और बहुत अच्छी थीं।

यूरोप में सत्रहवीं शताब्दी में बंदूक का इस्तेमाल होने लगा था जबकि भारत में अठारहवीं शताब्दी में बंदूक का प्रयोग आरम्भ हुआ।

मुगल सेना द्वारा प्रयोग किया गया सिर का लौह टोप

बारुद रखने का मुगलकालीन बर्तन

आर्थिक स्थिति

मुगल काल में आर्थिक विकास में और अधिक प्रगति हुई। व्यापार और वस्तु निर्माण का विस्तार हुआ। खेती-बाड़ी में भी सुधार हुए परन्तु यूरोप की तुलना में भारत न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बल्कि अन्य मामलों में भी पिछड़ा ही रहा। माल का ज्यादातर निर्माण छोटे पैमाने पर ही किया जाता था। मशीनों का कोई इस्तेमाल नहीं किया गया और कारीगर सरल से सरल औजारों से ही काम करते रहे। नतीजा यह हुआ

कि कोई कारीगर चाहे जितना भी कुशल रहा हो उसकी उत्पादक क्षमता निम्न कोटि की ही रही।

सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में 'ददनी' प्रथा का चलन हुआ, जिसके अनुसार देशी-विदेशी दोनों व्यापारी कारीगरों को काम करने के लिए थोड़ी-बहुत पूँजी दे दिया करते थे और जब वे माल तैयार कर लेते थे तो उनसे ले लेते थे। इससे कारीगर इन लोगों के और भी मोहताज़ हो गए।

इन्हीं परिस्थितियों में अंग्रेजों ने भारत को जीतने और उसे एक उपनिवेश बना देने में कामयाबी हासिल की, और अब भारत पूरब का कारखाना होने की बजाय पश्चिम के लिए कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बन गया।

और भी जानिए

- उस समय भारत में छापेखाने का आविष्कार नहीं हुआ था किन्तु मुगलकालीन लेखनकला उच्चकोटि की थी। इस समय आठ प्रकार की सुलेखन शैली का प्रचलन था।
- मुगलकालीन शासकों ने मदरसों एवं मकतबों के माध्यम से शिक्षा पर भी जोर दिया।
- अकबर ने गणित, खगोलविद्या, आयुर्विज्ञान, दर्शन और तर्कशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन के प्रसार के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया।
- मुगल काल तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर, हरी मिर्च, अमरूद, सीताफल उगते ही नहीं थे। ये सब दक्षिण अमेरिका की सब्जियाँ व फल हैं जो मुगल काल के अन्त में यूरोप के व्यापारी भारत लाए लेकिन सेम, पालक, शकरकन्द, तोरई, करेला, लौकी, भिण्डी तथा बैंगन जैसी सब्जियाँ और केला, आम, तरबूज, बेर, अंगूर, अनार जैसे फल खूब होते थे।

शब्दावली

छापाखाना-प्रेस

ज्योतिष-ग्रहों एवं नक्षत्रों के आधार पर की जाने वाली भविष्यवाणी।

स्थापत्यकला-इमारतों आदि के निर्माण की कला।

दरगाह-सूफी सन्तों की कब्र पर बना स्मारक।

□ अभ्यास

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क)मुगल काल को 'स्वर्णयुग' क्यों कहा जाता है ?

(ख)मुगलों के समय फारसी और हिन्दी साहित्य में क्या विकास हुआ ?

(ग)मुगलकालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिए।

(घ)मुगलकाल में सामाजिक सांस्कृतिक समन्वय के विषय पर संक्षेप में लिखिए।

(ङ)शाहजहाँ कालीन प्रमुख इमारतों का वर्णन कीजिए।

(च)दारा शिकोह द्वारा फारसी में अनूदित पुस्तकों का नाम बताइए।

2.सही जोड़े मिलाइए-

(क)बुलन्द दरवाजाआगरा

(ख)ताजमहलफतेहपुर सीकरी

(ग)तुज़ुके जहाँगीरीअबुल फजल

(घ)अकबरनामामहाभारत

(ङ)रज्मनामाजहाँगीर

3.नीचे दी गयी तालिका में उन मुगल शासकों के नाम लिखिए जिनके सिक्के गोल, चौकौर अथवा दोनों तरह के थे।

गोलसिक्के

चौकोर सिक्के

गोल एवं चौकोर सिक्के

प्रोजेक्ट कार्य

पता लगाइए कि इस समय भारत के प्रमुख बन्दरगाह कौन-कौन से हैं और यह किन प्रदेशों में स्थित हैं ? इसकी सुमेलित सूची अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बनाइए।
यदि आपको कभी घूमने का अवसर मिले तो आप दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी व जयपुर में से किस स्थान पर जाना पसन्द करेंगे और क्यों ?

महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं तिथियाँ

622 ई0-हिजरी सन् का प्रारम्भ

1025 ई0-महमूद गजनवी का सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण

1191 ई0-तराइन का प्रथम युद्ध

1192 ई0-तराइन का दूसरा युद्ध

1206 ई0-मोहम्मद गौरी की मृत्यु, कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा गुलाम वंश की स्थापना

1210 ई0-इल्तुतमिश का राज्यारोहण

1236 ई0-इल्तुतमिश की मृत्यु, रजिया का राज्यारोहण

1290 ई0-खिलजी वंश की स्थापना

1296 ई0-अलाउद्दीन खिलजी का राज्यारोहण

1320 ई0-तुगलक वंश की स्थापना

1325 ई0-मोहम्मद बिन तुगलक का राज्यारोहण

1398 ई0-तैमूर का भारत पर आक्रमण

1451 ई0-लोदी राजवंश की स्थापना

1526 ई0-पानीपत का प्रथम युद्ध व मुगल साम्राज्य की स्थापना

1527 ई0-खानवा का युद्ध

1530 ई0-बाबर की मृत्यु, हुमायूँ का राज्यारोहण

1539 ई0-चौसा का युद्ध

1540 ई0-शेरशाह भारत का सुल्तान बना

1556 ई0-हुमायूँ की मृत्यु, अकबर का राज्यारोहण, पानीपत का द्वितीय युद्ध

1576 ई0-हल्दीघाटी का युद्ध

1605 ई0-अकबर की मृत्यु, जहाँगीर का राज्यारोहण

1628 ई0-शाहजहाँ का राज्यारोहण

1658 ई0-औरगंज़ेब का राज्यारोहण

1674 ई0-शिवाजी का राज्याभिषेक

1707 ई0-औरंगज़ेब की मृत्यु

1739 ई0-नादिरशाह का आक्रमण

1761 ई0-पानीपत का तृतीय युद्ध